Chapter 4

maketoss.com

सदैव पुरतो निधेहि चरणम्
(सदा कदम आगे बढ़ाओ)

(क) चल चल पुरतो निधेहि चरणम् ।
सदैव पुरतो निधेहि चरणम् ॥

शब्दार्थ — चल — चलो, पुरत: — आगे, नधेहि — रखो, चरणम् — कदम / पग
सदैव — सदा ही ।

अन्वय: — चल, चल । पुरत: चरणं निधेहि । सदैव पुरत: चरणं निधेहि ।

सरलार्थ — चलो, चलो । आगे कदम रखो । सदा ही आगे कदम रखो ।

(ख) गिरिशिखरे ननु निजनिकेतनम् ।
विनैव यानं नगारोहणम् ॥
बलं स्वकीयं भवति साधनम् ।
सदैव पुरतो .... ॥

maketoss.com

शब्दार्थ— गिरिशिखरे— पर्वत की चोटी पर। ननु — निश्चय से (surely)। निजनिकेतनम् — अपना घर। विनैव — बिना ही। यानं — सवारी। नगारोहणम् — पर्वत पर चढ़ना, स्वकीयम् — अपना। बलम् — शक्ति साधनम् — माध्यम।

अन्वय:— ननु निजनिकेतनं गिरिशिखरे (अस्ति)। (अत:) यानं विना एव नगारोहणं (कुरु)। स्वकीयं बलं साधनं भवति। सदैव पुरत: चरणम् निधेहि।

सरलार्थ— निश्चय ही अपना घर पर्वत की चोटी पर है। अत: सवारी के बिना ही पर्वत पर चढ़ना है। अपना बल ही साधन होता है। (इसलिए) सदा कदम आगे बढ़ाओ।

(ग) पथि पाषाणा विषमाः प्रखराः ।
हिंस्राः पशवः परितो घोराः ॥
सुदुष्करं खलु यद्यपि गमनम् ।
सदैव पुरतो .... ॥

maketoss.com

शब्दार्थ— पथि — मार्ग में, पाषाणाः — पत्थर, विषमाः — विषम, कठिन । प्रखराः — नुकीले (Sharp), हिंस्राः — हिंसक, परितः — चारों ओर । घोराः — भयानक, सुदुष्करम् — अत्यधिक कठिनाई से सिद्ध होने वाला खलु — निश्चय ही, यद्यपि — हालांकि, गमनम् — गमन/जाना (walk)

maketoss.com

अन्वयः — पथि विषमाः प्रखराः (च) पाषाणाः (विद्यन्ते)। परितः घोराः हिंस्राः पशवः (सन्ति)। यद्यपि गमनं खलु सुदुष्करम् (तथापि) सदैव पुरतः चरणं निधेहि ।

सरलार्थ — मार्ग में विचित्र ऊबड़-खाबड़ तथा नुकीले पत्थर हैं। चारों ओर भयंकर (व) हिंसक पशु हैं। यद्यपि (वहां) जाना निश्चय ही अत्यंत कठिन हैं, (फिर भी) सदा कदम आगे बढ़ाओ ।

(घ) जहीहि भीतिं भज भज शक्तिम् । maketoss.com
विधेहि राष्ट्रे तथाऽनुरक्तिम् ॥
कुरु कुरु सततं ध्येय- स्मरणम् ।
सदैव पुरो .... ॥

शब्दार्थ — जहीहि — छोड़ दो (त्याग दो), भीतिं — डर को, भज — जपो
विधेहि — करो, तथा — उसी प्रकार, अनुरक्तिम् — प्रेम, सततं —
निरंतर, ध्येय — लक्ष्य, उद्देश्य

maketoss.com

अन्वय: — भीतिं जहीहि । शक्तिं भज, भज । तथा राष्ट्रे अनुरक्तिं
विधेहि । ध्येय - स्मरणं सततं कुरु, कुरु । सदैव पुरतः चरणं
निधेहि ।

सरलार्थ — डर का त्याग करो । शक्ति को भजो । उसी प्रकार राष्ट्र से
प्रेम करो । निरंतर अपने लक्ष्य का स्मरण करो । सदा कदम
आगे बढ़ाओ ।